Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

मध्यकालीन भारत

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

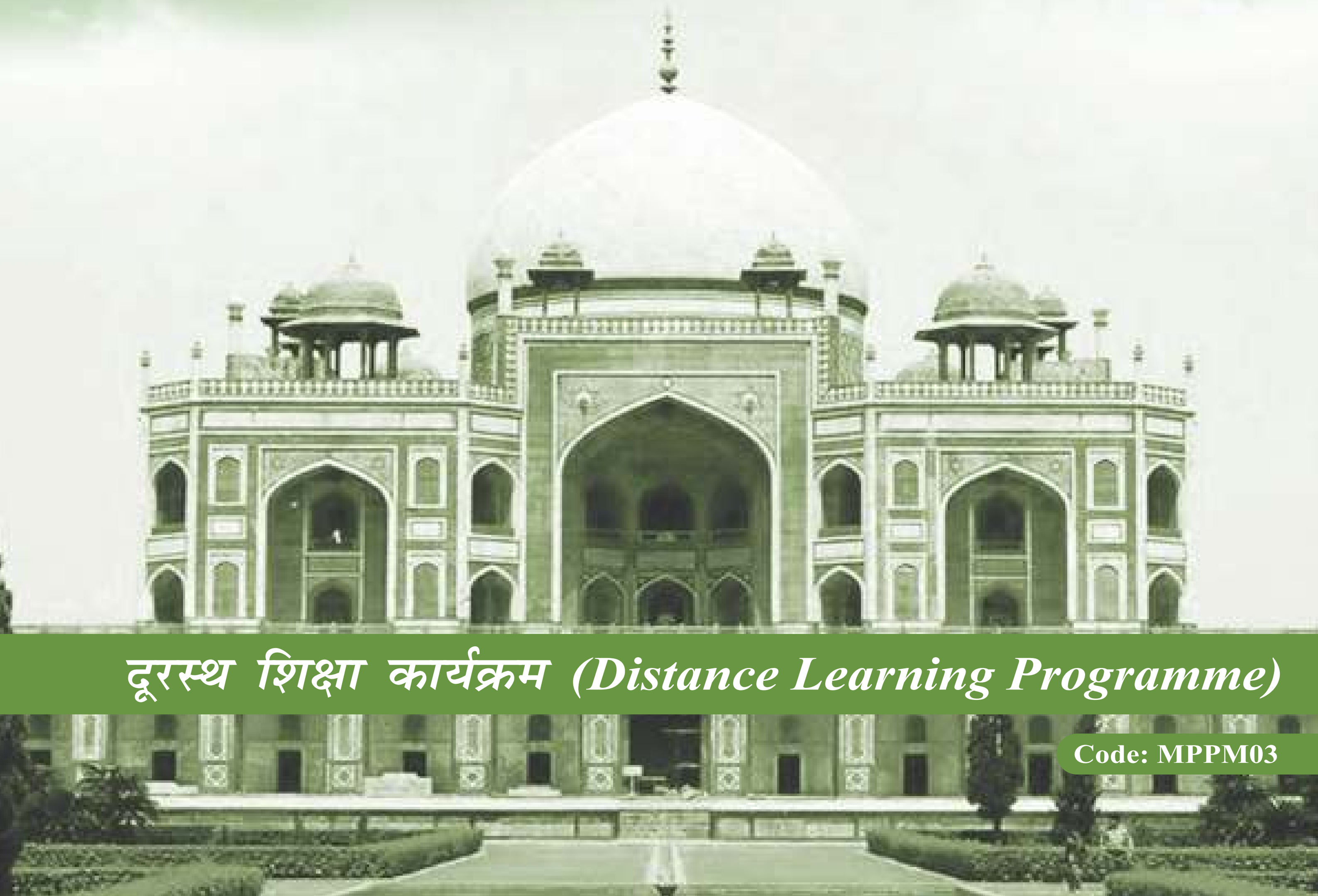

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम *(Distance Learning Programme)*

Code: MPPM03

मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग (MPPSC)

मध्यकालीन भारत

(मध्य प्रदेश के विशेष संदर्भ सहित)

दृष्टि The Vision

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

दूरभाष : 8750187501, 011-47532596

टोल फ्री : 1800-121-6260

Web : www.drishtiIAS.com

E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को “like” करें

www.facebook.com/drishtithevisionfoundation

www.twitter.com/drishtiias

MPPCS DLP

विषय सूची (Contents)

1. मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत **5-10**

2. भारत में तुर्कों का आगमन **11-15**

2.1 तुर्कों के आक्रमण से पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति 11

2.2 महमूद गज़नवी का आक्रमण 11

2.3 मोहम्मद गोरी का आक्रमण 12

3. दिल्ली सल्तनत **16-50**

3.1 गुलाम वंश 16

3.2 खिलजी वंश 21

3.3 तुगलक वंश 27

3.4 सैयद एवं लोदी वंश 34

3.5 सल्तनतकालीन प्रशासन 36

3.6 सल्तनतकालीन सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति 41

3.7 सल्तनतकालीन कला एवं स्थापत्य 45

4. क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13वीं-15वीं सदी **51-58**

5. विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य **59-72**

5.1 विजयनगर: राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्थिति 59

5.2 विजयनगर: सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति 65

5.3 बहमनी साम्राज्य 66

6. भक्ति एवं सूफी आंदोलन **73-81**

6.1 भक्ति आंदोलन 73

6.2 सूफी आंदोलन 77

7.	**मुगल साम्राज्य**	**82–117**
7.1	मुगल बादशाह	82
7.2	शेरशाह : प्रशासक एवं सुधारक	85
7.3	मुगल प्रशासन	97
7.4	सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति	105
7.5	स्थापत्य एवं कला	107
8.	**मराठा साम्राज्य**	**118–127**
8.1	उदय के कारण	118
8.2	शिवाजी	119
8.3	मुगल–मराठा संघर्ष	122
8.4	शिवाजी के उत्तराधिकारी	123

अध्याय
1

मध्यकालीन भारतीय इतिहास के स्रोत (Sources of Medieval Indian History)

अतीत की घटनाओं के संबंध में जानकारी के प्रमुख स्रोतों में पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक स्रोत आते हैं, जिसमें मध्यकालीन भारतीय इतिहास के अध्ययन के मौलिक स्रोत 'साहित्यिक स्रोत' ही हैं। इसके अंतर्गत समकालीन ऐतिहासिक रचनाएँ, जीवनियाँ, प्रशासन संबंधी रचनाएँ, यात्रा वृत्तांत आदि को शामिल किया जाता है। यद्यपि प्राचीन भारत में क्रमबद्ध इतिहास लेखन परंपरा का अभाव था परंतु मध्यकाल में इसे विकसित करने का श्रेय **तुर्क** और **मुगल** विद्वानों को प्राप्त है। मध्यकालीन भारतीय इतिहास की जानकारी के साहित्यिक स्रोतों को मुख्य रूप से दो भागों में बाँट सकते हैं:– सल्तनतकालीन रचनाएँ और मुगलकालीन रचनाएँ।

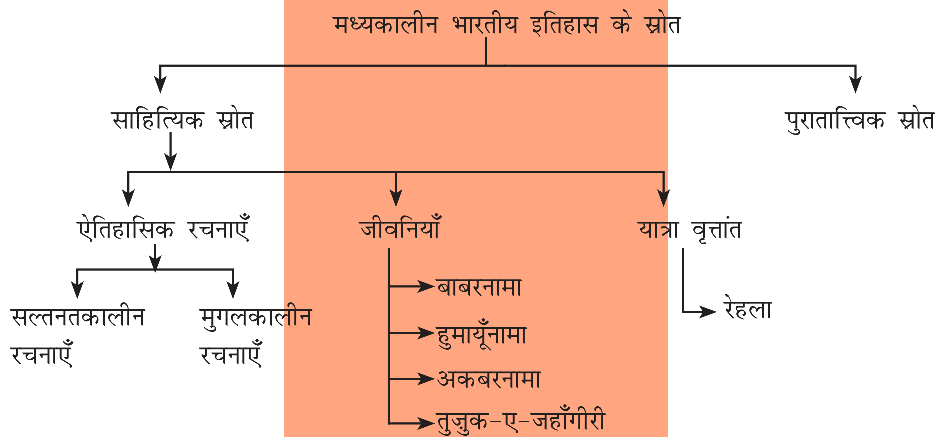

सल्तनतकालीन प्रमुख रचनाएँ *(Major compositions of Sultanate period)*

1. **किताब-उल-हिन्द** – इस ग्रंथ के लेखक **अलबरूनी** हैं। यह अरबी भाषा में लिखा गया है और इसका अंग्रेज़ी अनुवाद **'सचाऊ'** ने जबकि हिंदी अनुवाद **'रजनीकांत शर्मा'** ने किया है। यह 11वीं शताब्दी की भारतीय सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक जानकारी का प्रमुख स्रोत है।

   अलबरूनी ख्वारिज़्म (खीवा) का निवासी था, जिसने महमूद गज़नवी के भारत आक्रमण के दौरान भारत की यात्रा की थी। उसने अपनी पुस्तक के लेखन में कई प्राचीन भारतीय ग्रंथों की सहायता ली थी। पुराणों का अध्ययन करने वाला वह प्रथम मुसलमान था।

2. **तबकात-ए-नासिरी** – इस ग्रंथ की रचना **"मिनहाज-उस-सिराज"** ने फारसी भाषा में की थी। इस पुस्तक से मोहम्मद गोरी की भारत विजय तथा दिल्ली सल्तनत की स्थापना की प्रत्यक्ष जानकारी मिलती है।

   मिनहाज-उस-सिराज मध्य एशिया का निवासी था जो इल्तुतमिश के समय नासिरुद्दीन कुबाचा के अभियान के दौरान भारत आया था। उसने अपनी यह पुस्तक नासिरुद्दीन महमूद को सौंपी। सुल्तान बलबन ने उसे अपना काज़ी भी नियुक्त किया था।

3. **शाहनामा**– यह फारसी भाषा का एक महाग्रंथ है जिसकी रचना **फिरदौसी** ने महमूद गज़नवी के शासनकाल में की थी। फिरदौसी ने इस ग्रंथ को 30 साल की मेहनत के बाद सन् 1010 ई. में पूर्ण किया था और इसे महमूद गज़नवी को ही समर्पित किया था। इस ग्रंथ से महमूद के शासनकाल एवं उसके चरित्र-व्यवहार की जानकारी मिलती है।

4. **तारीख-ए-फिरोज़शाही (फतवा-ए-जहाँदारी)**– इस पुस्तक के लेखक **"जिआउद्दीन बरनी"** हैं। उन्होंने फारसी भाषा में इस पुस्तक की रचना की थी। इसमें बलबन से लेकर फिरोज़शाह तुगलक के शासन तक नौ शासकों के

9. **पादशाहनामाः** मुगल बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में पादशाहनामा नामक तीन ग्रंथों की रचना हुई। प्रथम की रचना मुहम्मद अमीर काजविनी, दूसरे की अब्दुल हमीद लाहौरी तथा तीसरे की रचना मुहम्मद वारिस ने की थी। यह ग्रंथ बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल की जानकारी का प्रमुख स्रोत है।
10. **नुस्खा-ए-दिलकुशाः** इस ग्रंथ की रचना भीमसेन ने की थी। यह ग्रंथ 17वीं शताब्दी के भारत को जानने का प्रमुख स्रोत है। इसमें बादशाह औरंगज़ेब की नीतियों एवं कार्यों का वर्णन है। इसके अतिरिक्त यह पुस्तक समकालीन दक्षिण भारत के इतिहास की जानकारी का महत्त्वपूर्ण स्रोत है।

परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- पूर्व मध्यकाल में अरबों द्वारा विजय का विस्तृत विवरण **'चचनामा'** नामक ग्रंथ में मिलता है। इसमें मुहम्मद बिन कासिम के भारत अभियान की चर्चा की गई है। इसके लेखक अज्ञात हैं तथा यह अरबी भाषा में लिखा गया है।
- अलबरूनी 11वीं शताब्दी में कई वर्षों तक भारत में रहा। वह मात्र इतिहासकार ही नहीं बल्कि खगोल विज्ञान, भूगोल, औषधि विज्ञान, गणित, दर्शन आदि का भी ज्ञाता था।
- **मुहम्मद हसन निज़ामी** ने सुल्तान कुतुबुद्दीन ऐबक की आज्ञा से **ताज-उल-मासिर** की रचना की। यह पुस्तक पद्य और गद्य दोनों ही शैलियों में लिखी गई है।
- **संध्याकरनंदी** ने पालवंश के शासक रामपाल के जीवन-चरित्र पर आधारित **'रामपाल चरित'** नामक ग्रंथ की रचना की जिसमें बंगाल के **कैवर्त्त विद्रोह** की जानकारी मिलती है।
- सल्तनतकालीन डाक व्यवस्था का विस्तृत विवरण अफ्रीकी यात्री **इब्नबतूता** ने अपने यात्रा वृत्तांत **रेहला** में दिया है। मुहम्मद बिन तुगलक ने इसे अपना दूत बनाकर चीन भेजा था।
- **मालफूज़ात-ए-तिमूरी**, तुर्की भाषा में लिखित मंगोल आक्रमणकारी **तैमूर** की आत्मकथा है जिसका फारसी अनुवाद **तालिब हुसैनी** ने किया।
- **फिरोज़शाह तुगलक** ने अपनी आत्मकथा **फतूहात-ए-फिरोज़शाही** की रचना की। इसमें उसके द्वारा इस्लाम धर्म के प्रसार के लिये किये गए कार्यों का वर्णन है।
- **इसामी** के ग्रंथ **फुतूह-उस-सलातीन** में 14वीं शताब्दी के दक्षिण भारत की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थिति तथा मुहम्मद बिन तुगलक के समय दक्षिण भारत में हुए विद्रोहों का वर्णन है।
- **'शाहनामा'** फारसी भाषा का एक महाग्रंथ है जिसकी रचना **फिरदौसी** ने की थी। वह महमूद गज़नवी के दरबार से संबंधित था।
- **शम्स-ए-शिराज अफीफ** ने भी **तारीख-ए-फिरोज़शाही** नामक ग्रंथ की रचना की। इसे सुल्तान फिरोज़शाह तुगलक का संरक्षण प्राप्त था।
- **जियाउद्दीन बरनी** मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में 17 वर्षों तक उच्च पद पर आसीन था। वह उसकी उदारवादी नीतियों का विरोधी था इसलिये सुल्तान को दयालु तथा रक्त पिपासु दोनों कहता था।
- **अमीर खुसरो**, बलबन से मुहम्मद बिन तुगलक के शासन-काल तक कुल **आठ सुल्तानों के** राजदरबार से जुड़ा रहा। वह फारसी भाषा का भारतीयकरण करने वाला प्रथम कवि था।
- अमीर खुसरो ने **नूह सिपिहर** ग्रंथ में मुबारकशाह खिलजी का चाटुकारितापूर्वक वर्णन किया है तथा इसमें भारत की प्रकृति, जलवायु का वर्णन करते हुए भारत की तुलना स्वर्ग के उद्यानों से की है।
- **बाबरनामा** का अंग्रेज़ी अनुवाद **मैडम बैवरीज** ने तथा उर्दू भाषा में **नासिरुद्दीन हैदर** ने किया था। यह ग्रंथ मध्य एशिया एवं भारत की प्रकृति तथा यहाँ के लोगों के रहन-सहन, खान-पान आदि विषय में जानकारी का प्रमुख स्रोत है।
- **आईन-ए-अकबरी, अबुल फज़ल** का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है जिसमें प्रारंभिक मुगलकालीन शासन-प्रबंध, नियम-कानून आदि की चर्चा की गई है।
- **मुंतखाब-उल-लुआब** की रचना **हाशिम खफी खाँ** ने की थी। वह औरंगज़ेब के शासनकाल में उच्च पद पर आसीन था। इसमें 17वीं शताब्दी के भारत की झलक मिलती है। खफी खाँ ने इस पुस्तक को **मुहम्मदशाह** को समर्पित किया था।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से "तारीख-ए-फिरोजशाही" के रचनाकार कौन हैं? **M.P.P.C.S. (Pre) 2019**
(a) शम्स-ए-सिराज-अफीफ
(b) जियाउद्दीन बरनी
(c) ख्वाजा अब्दुल समद इसामी
(d) सिराजउद्दीन अली यजदी
2. आईन-उल-मुल्क मुल्तानी ने इनमें से किस शासक के अधीन सेवा नहीं की थी? **M.P.P.C.S. (Pre) 2017**
(a) अलाउद्दीन खिलजी (b) मुहम्मद बिन तुगलक
(c) फिरोज़ तुगलक (d) इल्तुतमिश
3. 'शाहनामा' का लेखक कौन था? **M.P.P.C.S. (Pre) 2015**
(a) उत्बी (b) फिरदौसी
(c) अलबरूनी (d) बरनी
4. निम्न में से कौन-सी रचना अमीर खुसरो की **नहीं** है? **M.P.P.C.S. (Pre) 2014**
(a) तुगलकनामा (b) आशिका
(c) नूह-सिपिहर (d) रेहला
5. अमीर खुसरो निम्नलिखित में से किसके शासनकाल से संबंधित थे? **M.P.P.C.S. (Pre) 2012**
(a) अलाउद्दीन खिलजी (b) मुहम्मद बिन तुगलक
(c) इब्राहिम लोदी (d) फिरोज़शाह
6. निम्नलिखित में कौन प्रसिद्ध ग्रंथ 'किताब-उल-हिन्द' के लेखक हैं?
(a) हसन निज़ामी (b) जियाउद्दीन बरनी
(c) अलबरूनी (d) मिनहाज-उस-सिराज
7. अलबरूनी किस आक्रमणकारी के साथ भारत आया था?
(a) मुहम्मद बिन कासिम (b) महमूद गज़नवी
(c) मोहम्मद गोरी (d) बाबर
8. ताज-उल-मासिर के लेखक मुहम्मद हसन निज़ामी किस सुल्तान के समकालीन थे?
(a) मोहम्मद गोरी (b) कुतुबुद्दीन ऐबक
(c) इल्तुतमिश (d) फिरोज़शाह तुगलक
9. सल्तनतकालीन लेखक मिनहाज उस सिराज की प्रमुख रचना है:–
(a) किताब-उल-हिन्द (b) तबकात-ए-नासिरी
(c) फतवा-ए-जहाँदारी (d) मिफता-उल-फुतुह
10. मिनहाज-उस-सिराज ने अपनी रचना किस सुल्तान को समर्पित की?
(a) बलबन
(b) अलाउद्दीन खिलजी
(c) नासिरुद्दीन महमूद
(d) बहरामशाह
11. तारीख-ए-फिरोज़शाही के लेखक कौन हैं?
(a) अलबरूनी
(b) मिनहाज-उस-सिराज
(c) शम्स-ए-सिराज अफीफ
(d) जियाउद्दीन बरनी
12. निम्नलिखित में से किस विद्वान एवं लेखक का जन्म भारतीय भूमि पर हुआ था?
(a) जियाउद्दीन बरनी (b) हसन निज़ामी
(c) अलबरूनी (d) मिनहाज-उस-सिराज
13. निम्नलिखित में किस विद्वान ने मुहम्मद बिन तुगलक को दयालु और रक्त पिपासु कहा था?
(a) इब्नबतूता (b) जियाउद्दीन बरनी
(c) हसन निज़ामी (d) मलिक इसामी
14. निम्नलिखित में कौन-सा ग्रंथ एक यात्रा-वृत्तांत का ऐतिहासिक ग्रंथ है?
(a) किताब-उल-हिन्द (b) रेहला
(c) फुतुह-उस-सलातीन (d) तबकाते-ए-नासिरी
15. ऐतिहासिक ग्रंथ फतूहात-ए-फिरोज़शाही की रचना किस सुल्तान ने की?
(a) फिरोज़शाह तुगलक
(b) मुहम्मद बिन तुगलक
(c) बहमनशाह
(d) इल्तुतमिश
16. निम्नलिखित में किस सल्तनतकालीन विद्वान एवं लेखक ने आठ सुल्तानों का शासनकाल देखा था?
(a) जियाउद्दीन बरनी (b) बदायूँनी
(c) अमीर खुसरो (d) मिनहाज-उस-सिराज
17. बाबर ने बाबरनामा की रचना किस भाषा में की थी?
(a) अरबी (b) चगताई तुर्की
(c) फारसी (d) उर्दू

18. निम्नलिखित में कौन-सा ग्रंथ प्रारंभिक मुगल राजवंश एवं कश्मीर के इतिहास को बताता है?
    (a) बाबरनामा (b) तारीख-ए-अकबरी
    (c) तारीख-ए-रशीदी (d) हुमायूँनामा
19. तारीख-ए-शेरशाही की रचना किस मुगलकालीन विद्वान ने की थी?
    (a) मिर्ज़ा हैदर (b) हसन अली खाँ
    (c) अब्बास खाँ शेरवानी (d) रिजाकुल्ला मुश्ताकी
20. हुमायूँनामा की रचना गुलबदन बेगम ने किसके आग्रह पर की थी?
    (a) हुमायूँ (b) बाबर
    (c) मुहम्मद हैदर (d) अकबर
21. मुगलकालीन ऐतिहासिक साहित्यिक स्रोत 'अकबरनामा' की रचना किस विद्वान ने की?
    (a) निज़ामुद्दीन अहमद (b) अबुल फज़ल
    (c) अमीर खुसरो (d) अहमद लाहौरी
22. निम्नलिखित में कौन-सा ऐतिहासिक ग्रंथ अकबर के शासनकाल का आलोचनात्मक वर्णन करता है?
    (a) अकबरनामा (b) तारीख-ए-अकबरी
    (c) तारीख-ए-बदायूँनी (d) तबकात-ए-अकबरी

उत्तरमाला

1. (a)	2. (d)	3. (b)	4. (d)	5. (a)	6. (c)	7. (b)	8. (b)	9. (b)	10. (c)
11. (d)	12. (a)	13. (b)	14. (b)	15. (a)	16. (c)	17. (b)	18. (c)	19. (c)	20. (d)
21. (b)	22. (c)								

अति लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 10-20 शब्दों/एक या दो पंक्तियों में दीजिये)

1. रेहेला **M.P.P.C.S. (Mains) 2018**
2. अकबरनामा **M.P.P.C.S. (Mains) 2012**
3. बाबरनामा
4. किताब-उल-हिन्द
5. तारीख-ए-रशीदी
6. पादशाहनामा

लघुउत्तरीय प्रश्न (उत्तर 50 शब्दों या 5 से 6 पंक्तियों में दीजिये)

1. अलबरूनी
2. जिआउद्दीन बरनी
3. इब्नबतूता
4. अमीर खुसरो
5. अबुल फज़ल

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (उत्तर लगभग 100/200/300 शब्दों में दीजिये)

1. सल्तनतकालीन साहित्यिक स्रोतों पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये।
2. अमीर खुसरो की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय दीजिये।
3. मुगलकालीन साहित्यिक स्रोतों पर एक लघु निबंध लिखिये।
4. मध्यकालीन साहित्यिक स्रोतों का विस्तृत वर्णन कीजिये।
5. मुगलकालीन साहित्यिक स्रोतों के विकास में अकबर के योगदान को स्पष्ट कीजिये।

अध्याय
2

भारत में तुर्कों का आगमन (Arrival of Turks in India)

तुर्कों के आक्रमण के पूर्व अरबों ने भारत पर आक्रमण किया, किंतु भारत में मुस्लिम शासन की स्थापना का श्रेय तुर्कों को जाता है। मुस्लिम आक्रमण के समय भारत में एक बार पुनः विकेंद्रीकरण तथा विभाजन की परिस्थितियाँ सक्रिय हो उठीं। तुर्क आक्रमण भारत में कई चरणों में हुए। प्रथम चरण का आक्रमण 1000 से 1027 ई. के बीच गज़नी के शासक महमूद गज़नवी द्वारा किया गया। इसके पूर्व सुबुक्तगीन (महमूद के पिता) की लड़ाई हिन्दूशाही शासकों के साथ हुई थी, किंतु उसका क्षेत्र सीमित था। भारत के गुजरात क्षेत्र तक महमूद ने अपना शासन स्थापित किया, लेकिन उत्तरी भारत के शेष क्षेत्र अभी तुर्क प्रभाव से बाहर थे। कालांतर में गौर के शासक शिहाबुद्दीन मोहम्मद गोरी ने पुनः भारत में सैनिक अभियान प्रारंभ किया। 1175 से 1206 ई. के बीच उसने और उसके दो प्रमुख सेनापतियों (ऐबक और बख्तियार खिलजी) ने गुजरात, पंजाब से लेकर बंगाल तक के क्षेत्र को जीतकर सत्ता स्थापित की। किंतु 1206 ई. में गोरी की मृत्यु के पश्चात् तुर्क साम्राज्य कई हिस्सों में बँट गया और आगे चलकर भारत में दिल्ली सल्तनत के नाम से तुर्क साम्राज्य स्थापित हुआ।

2.1 तुर्कों के आक्रमण से पूर्व भारत की राजनीतिक स्थिति *(Political Situation of India Before the Invasion of Turks)*

- मुल्तान तथा सिंध दोनों क्षेत्र 8वीं सदी के आरंभ में ही अरबों द्वारा विजित कर लिये गए थे। सिंध में अरबों की सत्ता के अवशेष अब भी बचे हुए थे।
- **हिन्दूशाही** राजवंश उत्तर-पश्चिम भारत का विशाल हिन्दू राज्य था, जिसकी सीमा कश्मीर से मुल्तान तक तथा चिनाब नदी से लेकर हिन्दुकुश तक फैली हुई थी। महमूद ने इसकी राजधानी **वैहिंद** पर आक्रमण कर दिया। यहाँ का शासक **जयपाल** था जिसने पराजित होने पर आत्महत्या कर ली।
- उत्तरी भारत में स्थित कश्मीर का क्षेत्र महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय से राजनीतिक अव्यवस्था से ग्रसित था। यहाँ की वास्तविक शासिका क्षेत्रगुप्त की पत्नी **दीद्दा** थी।
- इसके अतिरिक्त मुस्लिम आक्रमण के समय उत्तरी भारत में अनेक छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व था। जैसे– सिंध, मुल्तान, पंजाब, दिल्ली, बंगाल आदि।
- भारत का इस समय बाह्य देशों के साथ कोई विशेष संबंध नहीं था। राज्यों का आर्थिक आधार कमज़ोर था, जिसके फलस्वरूप सैन्य आधार भी कमज़ोर हो गया था।

राजनीतिक विभाजन की यह समस्या केवल राजपूत राज्यों तक ही सीमित नहीं थी, बल्कि इसका परिणाम देश के सामान्य जनजीवन पर भी पड़ा था। उत्तर भारत में राजनीतिक एकता का पूर्णतः अभाव था। इस समय देश में छोटे-छोटे राज्यों का अस्तित्व था, इस कारण से इस समय कोई भी एक राज्य या शासक इतना शक्तिशाली नहीं था जो इन्हें जीतकर एकछत्र राज्य स्थापित कर सके। आंतरिक कलह ने इन्हें कमज़ोर बना दिया था और विदेशी आक्रमण का प्रभावशाली ढंग से विरोध करना इनके लिये संभव नहीं था। इस स्थिति के लिये राजपूत शासक स्वयं भी ज़िम्मेदार थे, क्योंकि ये हमेशा आपस में संघर्षरत रहते थे। आंतरिक अशांति की इस परिस्थिति ने अंततः राजपूत शासकों का अस्तित्व समाप्त कर दिया।

2.2 महमूद गज़नवी का आक्रमण *(Invasion of Mahmood Ghaznavi)*

महमूद गज़नवी, गज़नी के शासक **सुबुक्तगीन** का पुत्र था। सन् 998 ई. में वह गज़नी का सुल्तान बना। महमूद गज़नवी प्रथम शासक था जिसने **सुल्तान** की उपाधि धारण की। वह एक दूरदर्शी एवं महत्त्वाकांक्षी शासक था। उसने भारतीय धन-सम्पदा की लूट एवं भारत में इस्लाम धर्म के प्रसार हेतु सन् 1000 से 1027 के बीच लगभग **17 बार** आक्रमण किये। उसके द्वारा भारत पर किये गए **प्रमुख आक्रमण** निम्नलिखित हैं:–

अध्याय 3

दिल्ली सल्तनत (Delhi Sultanate)

सन् 1206 ई. में मोहम्मद गोरी की आकस्मिक मृत्यु के कारण उत्तराधिकारी के संबंध में कोई निश्चित निर्णय नहीं लिया जा सका। गोरी का कोई पुत्र नहीं था, बल्कि उसके कई दास थे, उन दासों में तीन की स्थिति लगभग एकसमान थी। अत: उन तीनों ने आपस में उसके साम्राज्य को बाँट लिया। इसके अंतर्गत यल्दौज को गज़नी का राज्यक्षेत्र, कुबाचा को सिंध और मुल्तान का क्षेत्र तथा कुतुबुद्दीन ऐबक को भारतीय राज्यक्षेत्रों पर अधिकार प्राप्त हुआ।

सन् 1206 ई. से 1290 ई. तक उत्तर भारत के कुछ भागों पर जिन तुर्क शासकों ने शासन किया, उन्हें गुलाम वंश, मामलुक वंश, इल्वारी वंश व प्रारंभिक तुर्क आदि नामों से जाना जाता है।

3.1 गुलाम वंश *(Slave Dynasty)*

तेरहवीं शताब्दी की शुरुआत में तुर्कों द्वारा भारत में स्थापित प्रथम साम्राज्य को **गुलाम वंश** का नाम दिया गया। गुलाम वंश की स्थापना कुतुबुद्दीन ऐबक ने की थी, जो मोहम्मद गोरी का एक प्रमुख गुलाम था तथा आरंभिक तुर्क साम्राज्य को सुदृढ़ करने वाले सुल्तान इल्तुतमिश, बलबन आदि किसी न किसी शासक के गुलाम ही थे।

गुलाम वंश के शासक

	शासक	शासनकाल
1.	कुतुबुद्दीन ऐबक	1206 - 1210 ई.
2.	आरामशाह	1210 - 1211 ई.
3.	शम्सुद्दीन इल्तुतमिश	211 - 1236 ई.
4.	रुकनुद्दीन फिरोज़शाह	1236 ई.
5.	रज़िया सुल्तान	1236 - 1240 ई.
6.	मुइज़ुद्दीन बहरामशाह	1240 - 1242 ई.
7.	अलाउद्दीन मसूदशाह	1242 - 1246 ई.
8.	नासिरुद्दीन महमूद	1246 - 1265 ई.
9.	गयासुद्दीन बलबन	1266 - 1286 ई.
10.	मोइज़ुद्दीन कैकुबाद	1287 - 1290 ई.
11.	कैयूमर्स	1290 ई.

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206 - 1210 ई.)

- कुतुबुद्दीन ऐबक को भारत में तुर्की राज्य का संस्थापक माना जाता है। वह भारत में स्थापित तुर्क साम्राज्य का प्रथम शासक था।
- शासक बनने के बाद ऐबक ने सुल्तान की उपाधि ग्रहण नहीं की, न उसने अपने नाम का खुतबा पढ़वाया और न ही अपने नाम के सिक्के चलाए बल्कि वह केवल **'मलिक'** और **'सिपहसालार'** की पदवियों से ही खुश रहा।
- कुतुबुद्दीन ऐबक को सन् 1208 में दासता से मुक्ति मिली। उसने लाहौर से ही शासन का संचालन किया तथा लाहौर ही उसकी राजधानी थी।
- कुतुबुद्दीन ऐबक एक वीर एवं उदार हृदय वाला सुल्तान था, वह लाखों में दान दिया करता था। अपनी असीम उदारता के कारण उसे **'लाखबख्श'** कहा गया।
- ऐबक ने **हसन निजामी** और **फक्र-ए-मुदब्बिर** जैसे विद्वानों को संरक्षण दिया तथा प्रसिद्ध सूफी संत **ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी** के नाम पर दिल्ली में कुतुबमीनार की नींव रखी जिसे इल्तुतमिश ने पूरा करवाया।
- उसने दिल्ली में ही **'कुव्वत-उल-इस्लाम'** मस्जिद का निर्माण करवाया जिसे भारत में इस्लामी पद्धति पर निर्मित प्रथम मस्जिद माना जाता है तथा अजमेर स्थित **'अढ़ाई दिन का झोपड़ा'** नामक मस्जिद का भी निर्माण उसी ने करवाया।
- सन् 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण ऐबक की अकस्मात् ही मृत्यु हो गई।
- कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु के बाद उसका अयोग्य एवं अनुभवहीन पुत्र आरामशाह शासक बना जिसके कारण अमीरों ने स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। बंगाल, अलीमर्दान खाँ के अधीन स्वतंत्र हो गया। ऐसी परिस्थितियों में प्रमुख तुर्क, अमीर अली इस्माइल ने ऐबक के दामाद इल्तुतमिश को सुल्तान बनने के लिये आमंत्रित किया।
- इल्तुतमिश ने 1210 ई. में आरामशाह को पराजित किया और स्वयं सल्तनत का सुल्तान बना।

अध्याय
4

क्षेत्रीय शक्तियाँ : 13वीं-15वीं सदी
(Territorial Powers : 13th-15th Century)

मध्य एशियाई आक्रमणकारी तैमूर लंग ने 1398 ई. में दिल्ली सल्तनत पर आक्रमण किया। उसके आक्रमण ने जहाँ एक ओर तुगलक राजवंश का पतन कर दिया, वहीं दूसरी ओर दिल्ली सल्तनत के विघटन की प्रक्रिया तीव्र कर दी। तुगलक साम्राज्य के विघटन के पश्चात् केंद्रीय सत्ता लुप्त हो गई और इस विघटित साम्राज्य के अवशेषों पर ही कई क्षेत्रीय शक्तियों का उद्भव हुआ। इन क्षेत्रीय शक्तियों में उत्तरी भारत में **मालवा, जौनपुर, मेवाड़, कश्मीर, गुजरात, बंगाल, उड़ीसा व असम** प्रमुख थे जबकि दक्षिण भारत में **विजयनगर और बहमनी** प्रमुख राज्य थे।

इन क्षेत्रीय शक्तियों की स्वतंत्रता तब तक ही (लगभग 200 वर्ष) बनी रही जब तक कि मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुगलों का आगमन नहीं हुआ था। इस समय क्षेत्रीय शक्तियों की सबसे बड़ी खामी थी कि ये आपस में निरंतर एक-दूसरे के साथ संघर्षरत थे, जैसे– विजयनगर और बहमनी साम्राज्य, मालवा एवं जौनपुर तथा बंगाल का राज्य आदि। यही कारण रहा कि इन राज्यों द्वारा कभी भी विस्तृत साम्राज्य की स्थापना नहीं की जा सकी।

मालवा *(Malwa)*

मालवा का राज्य नर्मदा तथा ताप्ती नदियों के मध्य अवस्थित था। इस प्रांत को सन् 1305 में अलाउद्दीन खिलजी ने दिल्ली सल्तनत में शामिल किया था, परंतु तुगलक वंश के पतन के दौरान तुगलक गवर्नर **दिलावर खाँ** ने सन् 1401 ई. में स्वतंत्र **मालवा** साम्राज्य की स्थापना की।

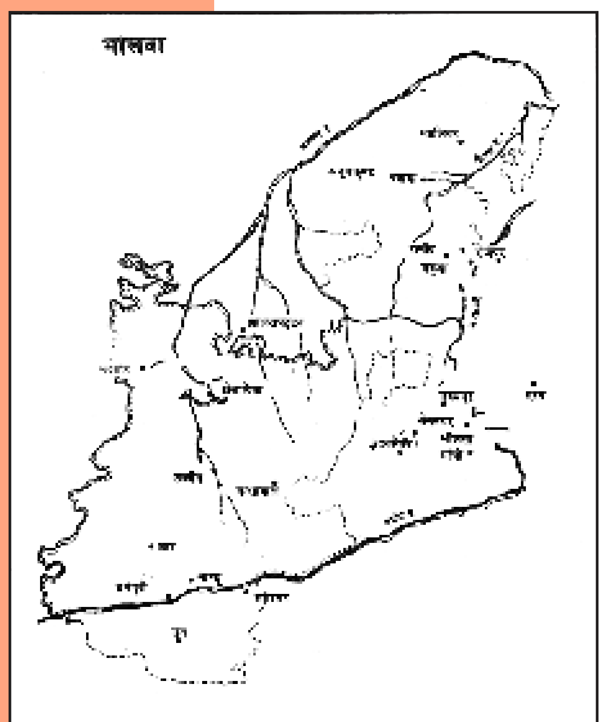

मालवा आर्थिक और सांस्कृतिक दोनों दृष्टि से समृद्ध राज्य था। पठारी क्षेत्र होने के कारण इसका सामरिक महत्त्व भी था। यहाँ के सुल्तानों ने राजधानी **मांडू** में अनेक भव्य एवं सुंदर महलों, मस्जिदों एवं मकबरों का निर्माण करवाया था। गुजरात एवं जौनपुर मालवा के प्रमुख प्रतिद्वंद्वी राज्य थे जिनमें आपस में हमेशा प्रतिस्पर्द्धा होती थी।

- **दिलावर खाँ** का वास्तविक नाम हुसैन था। उसने अपनी पुत्री का विवाह खानदेश के शासक फारुकी के बेटे अली शेर खिलजी के साथ किया तथा गुजरात के शासक **मुजफ्फर शाह** के साथ मित्रतापूर्ण संबंध बनाए रखते हुए मालवा को आक्रमण से बचाया।
- मालवा का प्रसिद्ध शासक **हुशंगशाह** था। उसने धार के स्थान पर **मांडू** को साम्राज्य की राजधानी बनाया।
- हुशंगशाह एक अत्यंत लोकप्रिय शासक था, उसने बहुसंख्यक हिन्दुओं के प्रति सहिष्णुता की नीति अपनाई तथा अनेक हिन्दुओं को मालवा में बसने के लिये प्रेरित किया।
- हुशंगशाह महान विद्वान और सूफी संत शेख बुरहानुद्दीन का शिष्य था। उसके संरक्षण में अनेक सूफी संत मालवा की ओर आकर्षित हुए। हुशंगशाह ने 1435 ई. में अपनी मृत्यु से पूर्व नर्मदा के किनारे **होशंगाबाद** नगर की स्थापना की।
- सन् 1436 ई. में इसके वंश को समाप्त कर महमूद खिलजी ने मालवा में एक नए खिलजी वंश की स्थापना की। उसने **गुजरात, मेवाड़** और **बहमनी** राज्यों के साथ संघर्ष किया और मालवा को एक शक्तिशाली साम्राज्य बनाया।

अध्याय
5

विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य (Vijayanagar and Bahmani Empire)

14वीं शताब्दी के प्रथम चरण या मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में लगभग संपूर्ण दक्षिण भारत दिल्ली सल्तनत में शामिल किया जा चुका था। उसने दक्षिणी प्रांतों में मज़बूत सत्ता स्थापित करने के लिये कुछ प्रयास भी किये, जैसे– विजित प्रदेशों को प्रांतों में विभाजित किया, दौलताबाद में नई राजधानी बनाई परंतु सारे प्रयास असफल हो गए और दक्षिण के क्षेत्रों ने विद्रोह कर दिया। इसी विद्रोह के क्रम में दक्षिण भारत में दो नवीन साम्राज्यों का उदय हुआ। विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य। यद्यपि इन दोनों राज्यों के शासकों द्वारा स्थायित्व तथा प्रजा के कल्याण के लिये अनेक सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपाय किये गए परंतु दोनों के बीच तब तक आपसी संघर्ष चलता रहा, जब तक कि बहमनी राज्य का विघटन नहीं हो गया। इस प्रकार दक्षिण भारतीय इतिहास में विजयनगर एवं बहमनी साम्राज्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

5.1 विजयनगर: राजनीतिक एवं प्रशासनिक स्थिति *(Vijayanagar : Political and Administrative Status)*

विजयनगर राज्य की स्थापना हरिहर और बुक्का नाम के दो भाइयों के द्वारा 1336 ई. में की गई थी। कहा जाता है कि **हरिहर** और **बुक्का** वारंगल के काकतीय शासक प्रताप रुद्रदेव के पारिवारिक संबंधी या सामंत थे। तुगलकों ने वारंगल पर आक्रमण कर राज्य को नष्ट कर दिया तब दोनों भाई (हरिहर और बुक्का) **कांपिली** अथवा **अनेगोंडी** (वर्तमान कर्नाटक) राज्य में जाकर रहने लगे। एक विद्रोही को शरण देने के कारण कांपिली पर मुहम्मद तुगलक ने आक्रमण कर दिया तथा विजयोपरांत हरिहर और बुक्का को बंदी बना लिया गया। इन दोनों को इस्लाम धर्म स्वीकार करने के लिये विवश किया गया उसके उपरांत इन्हें विद्रोहियों के दमन के लिये दक्षिण भारत भेजा गया, परंतु दोनों भाइयों ने दक्षिण भारत में प्रारंभ हुई तुर्क सत्ता के विरोधी गतिविधियों में योगदान दिया तथा इस्लाम धर्म को त्यागकर श्रृंगेरी के प्रतिष्ठित गुरु **विद्यारण्य** की प्रेरणा से पुन: हिन्दू धर्म स्वीकार कर तुंगभद्रा नदी के किनारे सामरिक रूप से महत्त्वपूर्ण स्थान को विजयनगर के नाम से बसाया और शासन करने लगे। 1336 ई. में हरिहर विजयनगर का शासक बना। हरिहर और बुक्का द्वारा स्थापित वंश को उनके पिता संगम के नाम पर **संगम वंश** कहा गया।

प्रमुख राजवंश *(Major dynasty)*

राजवंश	संस्थापक	शासनकाल
संगम वंश	हरिहर एवं बुक्का	1336–1485 ई.
सालुव वंश	नरसिंह सालुव	1485–1505 ई.
तुलुव वंश	वीर नरसिंह	1505–1570 ई.
अरावीडु वंश	तिरुमल्ल	1570–1652 ई.

संगम वंश

शासक	शासनकाल
हरिहर प्रथम	1336–1356 ई.
बुक्का प्रथम	1356–1377 ई.
हरिहर द्वितीय	1377–1406 ई.
बुक्का द्वितीय	1406 ई.
देवराय प्रथम	1406–1422 ई.

अध्याय
6

भक्ति एवं सूफी आंदोलन
(Bhakti and Sufi Movement)

मध्यकालीन भारत के प्रारंभ में संतों तथा सूफियों के प्रयासों से हिन्दू एवं इस्लाम धर्म में नवीन शक्ति एवं गतिशीलता का संचार हुआ, इसे भक्ति एवं सूफी आंदोलन के नाम से जाना जाता है। भक्ति आंदोलन का प्रारंभ उपनिषदों, भगवद्गीता, पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों के आधार पर हुआ, जबकि सूफी आंदोलन इस्लाम की कट्टरता के विरुद्ध तथा तुर्की शासन में व्याप्त घुटन एवं उदासी को दूर करने के लिये हुआ।

भक्ति एवं सूफी आंदोलन का मुख्य उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराइयों को दूर करना तथा प्रेम और उदारता का संदेश देना था। इन आंदोलनों की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि इन्हें न तो राजकीय संरक्षण मिला और न ही राजनीतिक उतार-चढ़ाव से इनमें कोई विचलन आया।

6.1 भक्ति आंदोलन *(Bhakti Movement)*

भक्ति आंदोलन का विकास मुख्यत: दो चरणों में हुआ। पहले चरण की शुरुआत दक्षिण भारत में 8वीं शताब्दी से हुई जो 13वीं शताब्दी तक चला, जबकि दूसरे चरण की शुरुआत 13वीं शताब्दी में हुई और यह 16वीं शताब्दी तक चला। इस चरण का प्रमुख क्षेत्र उत्तरी भारत रहा।

भक्ति आंदोलन के संतों द्वारा हिन्दू धर्म में व्याप्त विसंगतियों के सुधार हेतु काफी प्रयास किये गए। दक्षिण भारत में भक्ति आंदोलन को शुरू करने का श्रेय नयनार और अलवार संतों को प्राप्त है। नयनार, शैव धर्म के अनुयायी थे वहीं अलवार, वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। इन नयनार तथा अलवार संतों द्वारा बौद्ध और जैन धर्म का विरोध किया गया तथा भक्ति को ईश्वर प्राप्ति का एकमात्र मार्ग बताया गया। उन्होंने कर्मकांडों और अंधविश्वासों की निंदा की तथा अपने उपदेश जन-समुदाय को स्थानीय भाषा में दिये। उनका यह एक समतावादी आंदोलन था, जिसमें जाति-धर्म तथा ऊँच-नीच का प्रबल विरोध किया गया था। प्रथम चरण के भक्ति आंदोलन के प्रमुख संत निम्नलिखित थे:-

शंकराचार्य

- शंकराचार्य को भक्ति आंदोलन का प्रथम संत माना जाता है। उनका जन्म **केरल के कलाडी** में 788 ई. में हुआ था।
- इनके दर्शन का आधार वेदांत अथवा उपनिषद् था। उन्होंने भारत में ब्रह्म एवं ज्ञानवाद का प्रसार किया, इसलिये उनके सिद्धांत एवं दर्शन को **अद्वैतवाद** के नाम से जाना जाता है।
- शंकराचार्य ने भारत में धर्म की एकता के लिये तथा पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोने के लिये भारत की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित किये। सन् 820 ई. में हिमालय की तलहटी में स्थित **केदारनाथ** में मात्र 32 वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई।

शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ

दिशा	स्थान	मठ
उत्तर	बद्रीनाथ	ज्योतिर्मठ
दक्षिण	श्रृंगेरी	वेदांत मठ
पूर्व	पुरी	गोवर्धन मठ
पश्चिम	द्वारका	शारदा मठ

रामानुज

- रामानुज 12वीं शताब्दी के प्रमुख संत थे, जिनका जन्म **तमिलनाडु के पेरंबदूर** में हुआ था। वे सगुण धारा के **वैष्णव** संत थे।

अध्याय
7

मुगल साम्राज्य
(Mughal Empire)

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मुगलों का आगमन एक नवीन युग का परिचायक था। यद्यपि भारत में मुगल वंश का संस्थापक **बाबर** विदेशी था और मंगोल तथा चंगेज खाँ जैसे आक्रमणकारियों का वंशज था, परंतु उसके और उसके वंशज द्वारा एक स्थिर एवं शांतिपूर्ण सत्ता स्थापित की गई तथा उसने लाखों लोगों पर उनकी मर्जी से शासन किया।

सन् 1404 ई. में तैमूरलंग की मृत्यु के बाद उसके उत्तराधिकारी शाहरुख मिर्जा के काल में मंगोल साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया। इस राजनीतिक शून्यता को भरने के लिये कई नए राज्यों की स्थापना **ट्रांस-ऑक्सियाना** के क्षेत्रों में हुई, जैसे- **उजबेक राज्य, सफवी राज्य** और **मुगल राज्य**। मुगल राज्य की स्थापना उमर शेख मिर्जा के नेतृत्व में हुई, जो फरगना नामक छोटे राज्य के शासक थे। सन् 1494 ई. में एक दुर्घटना में उमर शेख की मृत्यु हो गई। उसके बाद उसका पुत्र बाबर मात्र 11 वर्ष की आयु में ही फरगना का शासक बना। बाबर बड़ा महत्त्वाकांक्षी शासक था। वह फरगना में अपनी स्थिति सुदृढ़ करने के बाद तैमूर की राजधानी समरकंद को भी जीतना चाहता था और 1496 ई. में समरकंद पर अधिकार भी कर लिया, परंतु इस क्रम में उससे फरगना भी हाथ से निकल गया।

उजबेक सरदार तथा सफवी वंश के द्वारा बार-बार पराजय ने बाबर को अपने पैतृक सिंहासन को प्राप्त करने के विचार को त्याग कर भारत में अपना भाग्य आजमाने के लिये विवश कर दिया। इसी क्रम में बाबर ने सन् 1504 ई. में काबुल पर अधिकार कर लिया तथा 1507 ई. में पहली बार मिर्ज़ा की जगह **पादशाह** की उपाधि धारण की। बाबर ने जिस समय भारत पर आक्रमण किया, उस समय भारत में बंगाल, मालवा, गुजरात, सिंध, कश्मीर, मेवाड़, खानदेश, विजयनगर, बहमनी की रियासतें एवं दिल्ली स्वतंत्र राज्य थे।

7.1 मुगल बादशाह *(Mughal Emperor)*

बाबर के आक्रमण के समय दिल्ली में लोदी वंश के शासक इब्राहिम लोदी का शासन था। बाबर को भारत आने का निमंत्रण पंजाब के सूबेदार दौलत खाँ लोदी तथा इब्राहिम के चाचा आलम खाँ लोदी ने दिया था। इस निमंत्रण से ही उसे दिल्ली सल्तनत के आंतरिक मतभेद का पता चल चुका था और कहा जाता है कि इसी समय मेवाड़ का शासक **राणा सांगा** के राजदूत ने बाबर को भारत में आक्रमण करने के लिये आमंत्रित किया था।

बाबर (1526-1530 ई.)

- भारत में मुगल वंश की स्थापना बाबर ने सन् 1526 ई. के पानीपत के युद्ध की विजय के बाद की थी, परंतु इस विजय से पूर्व वह भारत में चार बार आक्रमण कर चुका था।
- बाबर ने भारत के विरुद्ध प्रथम अभियान 1519 ई. में **यूसुफजाई जाति** के विरुद्ध किया और इस अभियान में बाजौर और भेरा के किले को अपने अधिकार में कर लिया। इस किले को जीतने में ही उसने सर्वप्रथम बारूद और तोपखाने का प्रयोग किया।

पानीपत का प्रथम युद्ध

पानीपत का प्रथम युद्ध बाबर और इब्राहिम लोदी के मध्य अप्रैल 1526 ई. को हुआ, जिसे बाबर ने अपने कुशल सेनापतित्व और तोपखाना के प्रयोग द्वारा जीत लिया। उसने इब्राहिम लोदी की एक विशाल सेना को पराजित कर भारत में अपनी सत्ता स्थापित की थी। इस युद्ध में बाबर ने उजबेकों की युद्ध नीति **'तुलगमा युद्ध पद्धति'** तथा तोपों को सजाने की उस्मानी विधि का प्रयोग किया था।

इस युद्ध की गणना भारतीय इतिहास में एक निर्णायक युद्ध के रूप में होती है। इब्राहिम लोदी युद्ध स्थल में ही मारा गया और बाबर को दिल्ली तथा आगरा तक के क्षेत्र प्राप्त हो गए। साथ ही इब्राहिम लोदी के खजाने पर भी उसका नियंत्रण स्थापित हो गया। इससे बाबर की आर्थिक स्थिति मज़बूत हुई और वह आगे का युद्ध भी जीत सका।

अध्याय
8

मराठा साम्राज्य (Maratha Empire)

मुगल साम्राज्य के पतन के दौरान ही मराठा शक्ति का उदय हुआ। मराठों के उदय में सर्वप्रथम योगदान क्षेत्र-विशेष की भौगोलिक परिस्थितियों का था। मराठों का मूल निवास-क्षेत्र मराठवाड़ा तीन भागों में विभक्त था। पहला सह्याद्रि पर्वत से दक्षिण तटवर्ती भाग दूसरा सह्याद्रि का पर्वतीय क्षेत्र और तीसरा पूर्वी मैदान का पहाड़ी एवं जंगली क्षेत्र। सह्याद्रि के तटवर्ती क्षेत्र को कोंकण एवं पर्वतीय क्षेत्र को मावला के नाम से जाना जाता है। यहाँ कृषि कार्य कठिन था। प्राकृतिक परिस्थितियों के कारण मराठों में साहस, कठोर परिश्रम, आत्मसंयम जैसे गुणों का विकास हुआ। अपनी आजीविका को चलाने के लिये मराठे लूट-पाट का सहारा लेते थे। मराठों में एकता की भावना जगाने में मराठी भाषा का सर्वाधिक योगदान रहा।

भक्ति आंदोलन के संतों जैसे ज्ञानेश्वर, एकनाथ, तुकाराम और रामदास की शिक्षाओं ने मराठा राज्य के उदय में सहयोग दिया। ये संत जाति प्रथा का विरोध करते थे और स्थानीय मराठी भाषा में उपदेश देते थे। शिवाजी के गुरु रामदास ने महाराष्ट्र धर्म को प्रचारित किया।

दक्षिण की राजनीतिक स्थितियों ने भी मराठों के उत्थान में सहयोग दिया। बहमनी राज्य के विखंडन तक मराठे अनुभवी लड़ाकू जाति के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। सर्वप्रथम मुगलों के विरुद्ध संघर्ष में अहमदनगर के प्रधानमंत्री मलिक अंबर ने मराठों का सहयोग प्राप्त किया तथा मराठों को अपनी सेना में शामिल किया। सर्वप्रथम शिवाजी के पिता शाहजी भोंसले अहमदनगर की सेना में शामिल हुए फिर वह बीजापुर के सूबेदार हो गए। 1620 ई. में शाहजी जहाँगीर की सेवा में चले गए। इस प्रकार जहाँगीर के काल में मराठे पहली बार मुगलों की सेवा में आए। मुगल बादशाह शाहजहाँ ने शाहजी को 5000 का मनसब प्रदान किया, परंतु शीघ्र ही शाहजी ने मुगलों का साथ छोड़ दिया और पुनः अहमदनगर आ गए। जनवरी 1664 ई. में शाहजी की मृत्यु हो गई।

मोडी लिपी

मोडी उस लिपि का नाम है, जिसका प्रयोग सन् 1950 तक महाराष्ट्र की प्रमुख भाषा मराठी को लिखने के लिये किया जाता था। मोडी शब्द की उत्पत्ति फारसी के शब्द शिकस्त के अनुवाद से हुई है, जिसका अर्थ होता है 'तोड़ना या मोड़ना' इसे हेमादपंत (या हेमाद्री पंडित) ने महादेव यादव और रामदेव यादव के शासनकाल के दौरान (1260-1309) विकसित किया था।

8.1 उदय के कारण *(Cause of Rise)*

मध्यकालीन भारतीय इतिहास में मराठा साम्राज्य का उदय कोई एक घटना नहीं, बल्कि यह विभिन्न कारकों का सम्मिलित प्रभाव था। उन कारकों में जहाँ मराठा क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति, यहाँ के भक्ति आंदोलन तथा औरंगजेब की नीतियों का योगदान रहा, वहीं शिवाजी के चमत्कारिक व्यक्तित्व ने भी उनके उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

मराठा साम्राज्य के उदय के कारण

- भौगोलिक क्षेत्र
- भक्ति आंदोलन का प्रभाव
- औरंगजेब की नीति

भौगोलिक क्षेत्र *(Geographical region)*

एम.जी. रानाडे ने अपनी पुस्तक **'द राइज़ ऑफ मराठा पॉवर'** (The rise of Maratha power) में मराठवाड़ा के ऊबड़-खाबड़ भौगोलिक क्षेत्र को उनके उदय का प्रधान कारण माना है।

भक्ति आंदोलन का प्रभाव *(Effect of Bhakti movement)*

14वीं शताब्दी के भक्ति आंदोलन की मराठों के उदय में महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। मराठा संतों ने एक ही भाषा में अपने उपदेश देकर तथा उच्च और निम्न वर्ग को एक-साथ जोड़कर राष्ट्र की भावना भर दी। शिवाजी के गुरु, समर्थ गुरु रामदास ने **दासबोध** नामक एक पुस्तक लिखी, जिसका प्रभाव शिवाजी पर पड़ा।

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 8750187501, 011-47532596